

उपायुक्त का न्यायालय, दुमका

रे0मि0 रिवीजन वाद सं0 05/2021-22

सरजू राय.....आवेदक

बनाम

कालेश्वर राय.....विपक्षी

आदेश

11.01.2022

यह रे0मि0 रिवीजन वाद अनुमंडल पदाधिकारी, दुमका के पी0ए0 वाद सं0-58/2020-21 में पारित आदेश दिनांक-28.08.2021 के विरुद्ध दायर किया गया है, जिसमें आवेदक के दावों को अस्वीकृत करते हुए विपक्षी को मौजा अगौया अंचल जरमुण्डी को प्रधान पद पर नियुक्त किया गया है।

आवेदक के विद्वान अधिवक्ता को सुना। अभिलेख में उपलब्ध कागजातों का अवलोकन किया।

आवेदक के विद्वान अधिवक्ता का तर्क निम्न प्रकार है :-

(1) मौजा अगौया नं0-55 सर्कल कमरडीहा अंचल-जरमुण्डी "निछपरा" मौजा है जो मौजा धावाटॉड़ से सटा हुआ है एवं प्रधानी मौजा है।

(2) गुरुचरण राय उक्त मौजा का अंतिम प्रधान थे।

(3) वंशावली के अनुसार आवेदक पूर्व प्रधान गुरुचरण राय के परपोता है।

(4) आवेदक पूर्व प्रधान के जेष्ठ पुत्र के वंशज है तथा विपक्षी कनिष्ठ पुत्र शालीग्राम राय के वंशज है।

(5) आवेदक, विपक्षी से अधिक शिक्षित है, तथा हमेशा सामाजिक कार्यों में भाग लेते हैं। विपक्षी सामाजिक कार्यों के विरुद्ध में संलिप्त रहता है। ग्रामीण उन्हें प्रधान पद पर नहीं चाहता है।

(6) आवेदक मौजा अगौया का लगान नियमति रूप से भुगतान करते आ रहे हैं। उनका दावा मौजा के प्रधानी पद पर बनता है।

(7) आवेदक प्रधान बनने के योग्य है। उन्हें मौजा धावाटॉड़ का प्रधान पद पर पूर्व प्रधान के परपोता होने के नाते उत्तराधिकारी के आधार पर नियुक्त किया गया है। इसके पश्चात्

भी विपक्षी को अनुमंडल पदाधिकारी, दुमका द्वारा प्रधान पद पर नियुक्त किया गया है जो गलत एवं अवैध है।

अतः अनुमंडल पदाधिकारी का आदेश को निरस्त करते हुए आवेदन को स्वीकृत किया जाय।

आवेदक की ओर से लिखित बहस दाखिल किया गया है।

अनुमंडल पदाधिकारी, दुमका द्वारा पारित आदेश में उल्लेखित तथ्य निम्न प्रकार है :-

अनुमंडल पदाधिकारी, दुमका द्वारा पारित आदेश में अंचल अधिकारी, जरमुण्डी के पत्रांक-648/रा0 दिनांक- 27.08.2021 से प्राप्त प्रतिवेदन के आधार पर निम्न प्रकार उल्लेख है :-

(1) मौजा अगौया एक बेचिरागी है। गँजर सर्वे खतियान में यह एक प्रधानी मौजा था। जिसके प्रधान गुरुचरण राय थे। उनके मृत्यु उपरान्त मौजा अस्थाई रूप से खास था। सभी आवेदक मौजा धावाटॉड़ में निवास करते हैं। दोनो मौजा एक दूसरे से सटा हुआ है। जिसकी दूरी शून्य किलोमीटर है।

(2) अंचल अधिकारी द्वारा समर्पित प्रतिवेदन के अनुसार आवेदक सरजू राय अंतिम प्रधान के प्रथम पुत्र के वंशज से आते हैं तथा वर्तमान में मौजा धावाटॉड़ का प्रधान है। विपक्षी अंतिम प्रधान के छोटे पुत्र शालीग्राम राय के वंश से आते हैं, जिन्हें संथाल परगना कास्तकारी अधिनियम के धारा-6 के अन्तर्गत अगौया का प्रधान पद पर नियुक्त किया गया है।

प्रावधान

Sec-6 Landlord to report the death of village headman.

— When the village headman of a village which is not khas dies the landlord of the village shall report the fact within three months of its occurrence to the Deputy Commissioner with a view to the appointment of a village headman in the prescribed manner.

संथाल परगना कास्तकारी (पूरक) रूल्स-1950 सिड्डल-V:-

Rule-1- The appointments of headman shall be made in accordance with village customs. And before confirming any appointment, the Deputy Commissioner shall satisfy himself that the candidate is generally acceptable to the *raiya*s, and an

opportunity shall also in every instance, be afforded to the proprietor to object to any candidate.

निष्कर्ष

आवेदक के विद्वान अधिवक्ता को सुनने एवं अभिलेख में उपलब्ध कागजातों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि आवेदक मौजा धावाटॉड़ का प्रधान पद पर पूर्व में ही नियुक्त किया गया है एवं कार्यरत है। फलस्वरूप मौजा अगौया का प्रधान पद पर विपक्षी को पूर्व प्रधान के कनिष्ठ पुत्र के वंशज होने के नाते नियुक्त किया गया है।

अभिलेख से अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि गेंजर प्रधान गुरुचरण राय के मृत्यु के पश्चात् से ही मौजा खास है। गेंजर प्रधान की मृत्यु के काफी समय बाद यह प्रधानी नियुक्ति वाद प्रारंभ की गई है।

पूर्व प्रधान के मृत्यु एवं नये प्रधान की नियुक्ति हेतु दिये गये आवेदन में काफी समय का अंतराल है। इस पर माननीय आयुक्त द्वारा विक्रम मुर्मू बनाम बेजन मुर्मू एवं अन्य में पारित आदेश के आलोक में कार्रवाई की जानी चाहिए, जो निम्न प्रकार उल्लेखित है :-

If there is a gap several years between the death of *pradhan* and appointment of *pradhan* then procedure laid down under Section 5 should be adopted for the appointment of new *pradhan*. The question of hereditary right has significance only when the new *pradhan* is appointed following the death of a former *pradhan*. The principle underlying that procedure is that the *raiyats* will transfer the loyalty which they had to the late *pradhan*, to his son or heir. But consideration ceases to be operative when there is a gap of several years between the death of a *pradhan* and the appointment of a new *pradhan*.

इस आधार पर अपीलकर्ता का दावा संथाल परगना कास्तकारी अधिनियम के धारा-6 के अन्तर्गत नहीं बनता है।